भूमिका

साहित्य की उपयोगिता उसके परिवर्तन के सिद्धांत से जुड़ी हुई है। साहित्य में परिवर्तन की प्रक्रिया का लंबा इतिहास मिलता है। असल में प्रकृति और साहित्य दोनों परिवर्तन के सिद्धांत पर आधारित प्रक्रिया हैं। परंतु दोनों के परिवर्तन का बुनियादी अंतर यह है कि जहां प्रकृति का परिवर्तन नियति पर आधारित होता है, वहीं साहित्य के परिवर्तन के केंद्र में मनुष्य और समाज है। दरअसल साहित्य का परिवर्तन अनुभूतिपरक परिवर्तन है क्योंकि इस प्रक्रिया में परिवर्तन संवेदना, दृष्टि , विचारधारा एवं व्यवस्था के स्तर पर होता है। परिवर्तन का यह रूप 'हमज़ाद' उपन्यास में देखने को मिलता है जहां मनोहरश्याम जोशी (मश्जो) आधुनिकता की तथाकथित मान्यताओं को खंडित कर समाज की संरचना को बदलने का प्रयास करते है। 'हमज़ाद' उपन्यास में परिवर्तन का स्तर न केवल विषयवस्तु को लेकर है बल्कि उसकी भाषा और शिल्प को भी लेकर है। 'हमज़ाद' में होने वाली घटनाओं को समझने के लिए उत्तर आधुनिकता की अवधारणा को जानने की आवश्यकता है । 'हमज़ाद' को लेकर साहित्यकारों में भ्रम की स्थिति बनती रही है परंतु उत्तर-आधुनिकता को साहित्य में स्थापित करने में इस उपन्यास ने महत्वपूर्ण भूमिका निभायी है । हिंदी उपन्यास में उत्तर आधुनिकतावाद का आगमन किन सैद्धांतिक पक्षों को लेकर माना जाए यह एक प्रश्न है, परंतु इस प्रश्न का उत्तर 'हमज़ाद' उपन्यास में मौजूद है। इन्हीं तथ्यों की बारीकियों को समझने का प्रयास मैंने अपने लघु शोध प्रबंध 'उत्तर आधुनिकता का संदर्भ और हमज़ाद' में किया है। प्रस्तुत लघु शोध प्रबंध को मैंने चार अध्यायो में विभाजित किया है।

प्रथम अध्याय के अंतर्गत आधुनिकता के अर्थ, स्वरूप एवं अवधारणा को समझने का प्रयास किया गया है। इस अध्याय में आधुनिकता की संवेदना एवं सिद्धांतों पर संक्षिप्त रूप से विचार किया गया है । इस अध्याय में मूल रूप से आधुनिकता के ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य, सिद्धांत एवं उसकी अवधारणा को व्यापक ढंग से विश्लेषित करने का प्रयास किया गया है। इस अध्याय को शोध में शामिल करने का प्रयोजन यह है कि आधुनिकता अपने समय और समाज की समस्याओं से किस

प्रकार जुड़ती हैं, उन्हें जानने का प्रयास किया जाए। आधुनिकता की इस पृष्ठभूमि को समझे बिना उत्तर आधुनिकता की वैचारिक पृष्ठभूमि को सही अर्थों में नहीं समझा जा सकता। दरअसल आधुनिकता की शक्ति और सीमाओं को जानकर ही उत्तर-आधुनिकता जैसी अवधारणाओं को बेहतर तरीके से समझा जा सकता है। आधुनिकता अपनी विकास यात्रा में समाज के किन पक्षों को प्रभावित कर पायी है एवं परंपरा को समाप्त करते हुए मानवता को कहां तक स्थापित कर पायी है, ऐसे तमाम तथ्यों पर इस अध्याय में सम्यक रूप से विचार किया गया है।

शोध विषय के दूसरे अध्याय में मैंने उत्तर आधुनिकता के सिद्धांतों एवं स्वरूपों को जानने का प्रयास किया है। इस अध्याय में उत्तर आधुनिकता के सिद्धांतों द्वारा आधुनिकता की अवधारणाओं का खंडन दिखाने का प्रयास किया गया है एवं कौन से ऐसे सिद्धांत थे जिनके आधार पर आधुनिकता की उपयोगिता को समाज से समाप्त कर दिया गया, इस पर भी विचार किया गया है. इस अध्याय में पूंजीवाद का समाज पर प्रभाव एवं औद्योगिकीकरण के नकारात्मक पक्ष पर बात की गई है। उत्तर आधुनिकता की वैचारिक पृष्टभूमि का विश्लेषण इस अध्याय का मजबूत पक्ष है। विश्लेषण के दौरान ल्योतार, जैम्सन एवं बौद्रिया के विचारों को विस्तृत रूप में प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है। इन विचारकों ने उत्तर आधुनिकता को किस प्रकार प्रचारित किया एवं आधुनिकतावादी मूल्यों को निराधार घोषित किया, जैसी घटनाओं पर इस अध्याय में विचार किया गया है।

तीसरे अध्याय में उत्तर आधुनिकता से उपजे विमर्श के नए आयामों को प्रस्तुत किया गया है। इसके अंतर्गत स्त्री विमर्श एवं दलित विमर्श के अर्थ व समकालीन परिवेश में उनके साहित्य की प्रासंगिकता को लेकर विचार किया गया है। उत्तर आधुनिकता के दौर में सूचना और प्रौद्योगिकी ने किस प्रकार विमर्श की उपयोगिता को साबित करते हुए इसे प्रचारित करने का कार्य किया है , इस अध्याय में इन्हीं तथ्यों पर प्रकाश डाला गया है।

शोध प्रबंध का चौथा अध्याय विषय की दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण है। इस अध्याय में उपन्यास के उन सभी पक्षों पर विचार किया गया है, जो उत्तर आधुनिकतावादी अवधारणा को व्यक्त

करते हैं। इस अध्याय में हमज़ाद के कथ्य और शिल्प में उत्तर आधुनिकता को ढूंढने का प्रयास किया गया है। उपन्यास में किस प्रकार भारतीय संस्कृति और सामाजिक मूल्यों को नकारते हुए आधुनिकतावादी विचारों का अतिक्रमण किया गया है। इस अध्याय में विषय को विस्तृत एवं व्यवस्थित ढंग से विश्लेषित करने का प्रयास किया गया है। मैंने अपने शोध में आलोचनात्मक, विश्लेषणात्मक एवं तुलनात्मक प्रविधि का प्रयोग किया है ।

पहली बार शोध करते हुए यह अनुभव हुआ कि शोध का क्षेत्र बाहर से जितना आकर्षक हो इसकी आंतरिक प्रक्रिया उतनी ही जटिल होती है। इस प्रक्रिया से गुजरते हुए मैंने खुद को कई बार असहज महसूस किया परंतु इस दौरान मेरे पिता एवं मेरी पत्नी निशा के द्वारा मुझे मानसिक रूप से सहयोग मिला इसके लिए मैं इन दोनों के प्रति आभार प्रकट करता हूं।

यह शोध मेरे लिए बेहद जटिल था क्योंकि मैंने जिस विषय का चयन किया था वह अपने आप में विवादास्पद रहा है। शोध के दौरान पारिवारिक कारणों की वजह से भी कुछ समस्याएं उत्पन्न हुईं परंतु मेरे गुरुप्रो. कृष्ण कुमार सिंह ने कुशल शोध निर्देशन देते हुए मुझे इन समस्याओं से जूझना सिखाया, जिसके बल पर मैंनें अपना शोध कार्य बेहतर तरीके से पूरा कर पाया। उन्होंने मुझे मानसिक रूप से बल प्रदान किया और शोध के दौरान की जाने वाली गलतियों के प्रति मुझे आगाह किया। उन्होंने मेरी सीमाओं का मूल्यांकन करते हुए उसमें सुधार लाने को लेकर तत्परता दिखाई। शोध के दौरान उनसे मुझे सदैव अभिभावक जैसा स्नेह मिलता रहा। विभागाध्यक्ष होने के कारण उन पर कार्यों का अतिरिक्त दबाव था किंतु इन परिस्थितियों में भी उन्होंने शोध के लिए मुझे अपना पर्याप्त समय दिया। इसके लिए मैं उनके प्रति आभार व्यक्त करता हूं।

इस शोध के दौरान मेरे कुछ प्रिय मित्रों और संबंधियों ने प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप से मेरा सहयोग किया जिसके लिए मैं अपने बड़े भाई प्रशांत कुमार, संजीव झा एवं मित्र अंकित अभिषेक, राजीव और सच्चिदानंद केशरी का शुक्रगुजार हूं।